राष्ट्रीय वस्त्र निगम की पंजाब, दिल्ली और राजस्थान स्थित मिलों को घाटा

374. **श्री जिग्वासराव रामराव पाटिल :** क्या वस्त्र मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि राष्ट्रीय वस्त्र निगम की दिल्ली, पंजाब और राजस्थान स्थित मिलों को भारी घाटा हुआ है ;

(ख) यदि हां, तो इसके क्या कारण ;

(ग) गत दो वर्ष के दौरान उक्त मिलों में से प्रत्येक मिल को कितना-कितना घाटा उठाना पड़ा है ; और

(घ) ऐसे घाटों को रोकने के लिए सरकार ने क्या-क्या कदम उठाए हैं ?

वस्त्र मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री रफीक आलम) : (क) और (ख) एन० टी० सी० (डी० पी० आर०) के अंतर्गत वस्त्र मिलें विभिन्न कारणों की वजह से घाटा उठा रही है । हानियों के प्रमुख कारण नीचे दिए गए हैं :—

(1) पुरानी तथा अप्रचलित मशीनरी;

(2) रुई तथा अन्य अनिवार्य साधनों की लागत में वृद्धि ;

(3) बिजली की कटौती कैप्टिव पावर की ऊंची लागत ;

(4) देशी श्रमिक बल ।

(ग) वर्ष 1986-87 तथा 1987-88 के दौरान एन० टी० सी० (डी० पी० आर०) के अंतर्गत मिलों द्वारा मिलकर हुई निवल हानियां नीचे दी गयी हैं :—

क्रम सं०	मिल का नाम	निवल हानि (लाख रु० में)	
		1986-87	1987-88
1.	दियालबाग स्पि० एण्ड वि० मिल्स, अमृतसर	—60.76	30.1
2.	सूरज टैक्सटाइल मिल्स, मल्लकोट . .	—61.77	—29.00
3.	श्री विजय कॉटन मिल्स, विजयनगर	—61.08	—32.57
4.	खरड़ टैक्सटाइल मिल्स, खरड़ . .	—48.15	— 4.82
5.	उदयपुर कॉटन मिल्स, उदयपुर . .	—20.60	—18.95
6.	अयुधिया टैक्सटाइल मिल्स, दिल्ली . .	312.82	—352.20
7.	महालक्ष्मी मिल्स, ब्यावर . .	—40.69	—98.23
8.	एडवर्ड मिल्स, बयावर . . .	—48.94	—83.89
9.	पानीपत वूलन मिल्स, खरड़ . .	—106.17	—21.05

(घ) सरकार एन० टी० सी० मिलों के निष्पादन की आवधिक समीक्षा करती है और उनके निष्पादन में सुधार लाने के लिए उपाय सुझाती है ।